अप्रैल 2024

वर्ष 3, अंक 4

दयालबाग़ एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड टु बी यूनिवर्सिटी)

डी.ई.आई.– मासिक समाचार

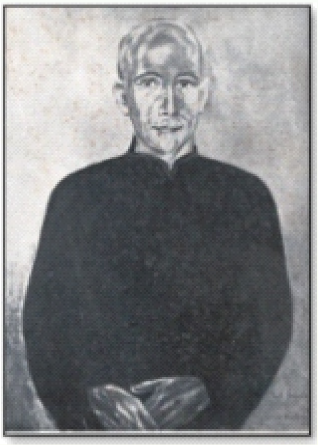

"अगर कोई या कुछ भी, जैसे एक व्यक्ति या एक पुस्तक, हमें दूसरों के प्रति नाराजगी या जीवन के प्रति कड़वाहट, जो भावनाओं, विचारों और स्वास्थ्य के मामले में जहर घोलने का काम करती है, से मुक्त करने में योगदान दे सके, उस व्यक्ति ने हमारी बहुत अच्छी सेवा की है, उस पुस्तक ने अपनी सार्थकता सिद्ध कर दी है।"

— पॉल ब्रंटन

खंड

खंड क : डी.ई.आई. 3

खंड ख : डी.ईआई. – ऑनलाइन और दूरस्थ शिक्षा 7

खंड ग : डी.ई.आई. के भूतपूर्व छात्र (AAADEIs & AAFDEI) 10

दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट
(डीम्ड टु बी यूनिवर्सिटी)
दयालबाग़, आगरा– 282005

विषय–सूची

खंड क: डी.ई.आई.

1. डी.ई.आई. प्रतिनिधिमंडल ने अंतर–विश्वविद्यालय राष्ट्रीय युवा महोत्सव में दो पुरस्कार जीते............ 3
2. दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट और वाटरलू विश्वविद्यालय ने शैक्षणिक और वैज्ञानिक सहयोग बढ़ाया 3
3. ऑर्गेनाइज़ेशनल बिहेवियर एंड लाइफ स्किल पर शॉर्ट टर्म कैपेसिटी बिल्डिंग कार्यक्रम का आयोजन.............. 3
4. शोध प्रविधि पर शॉर्ट टर्म कैपेसिटी बिल्डिंग कार्यक्रम का आयोजन 4
   संकाय समाचार............ 4
5. कला संकाय 4
   शिक्षकोपलब्धि............ 4
   शिक्षा संकाय 5
6. तीन दिवसीय कार्यशाला–सह–हैकथॉन का आयोजन............ 5
   शिक्षा में प्रभावी संचार हेतु शास्त्रीय नृत्य पर कार्यशाला का आयोजन 5
   विज्ञान संकाय............ 5
7. शिक्षकोपलब्धि............ 5
   समाज विज्ञान संकाय............ 5
8. दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन............ 5
   सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम (एम एस एम ई) निर्माण और विकास में डिजिटलीकरण की भूमिका............ 5
9. शिक्षकोपलब्धि............ 6
10. छात्र और शिक्षकोपलब्धियाँ............ 6

खंड ख: डी.ई.आई. ऑनलाइन और दूरस्थ शिक्षा

11. कोऑर्डिनेटर की डेस्क से............ 7
12. शिक्षा 5.0 और इसका कार्यान्वयन............ 8
    1. शिक्षा का विकास
    2. शिक्षा 5.0 का कार्यान्वयन
13. सूचना केन्द्रों से समाचार 9
    गादीरास (सुकमा) में मनाई गई होली............ 9
    रूड़की सेंटर में 'विश्व स्वास्थ्य दिवस' मनाया गया 9

खंड ग: डी.ई.आई. के भूतपूर्व छात्र (AA DEIs & AAFDEI)

14. संपादक की डेस्क से............ 10
15. सूंड की कहानी, समय की जुबानी 10
    प्रणय भटनागर
16. हाथी फुसफुसाते हुए, 2022 अकादमी विजेता वृत्तचित्र की समीक्षा 12
    गुरप्यारी भटनागर
17. दिव्य आह्वान............ 13
    प्रिया सिंह
18. पूर्व छात्रों की बाइट्स............ 13
    प्रकाशन समितियाँ / सम्पादकीय बोर्ड............ 14

खंड क : डी.ई.आई.

डी.ई.आई. प्रतिनिधिमंडल ने अंतर-विश्वविद्यालय राष्ट्रीय युवा महोत्सव में दो पुरस्कार जीते

दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (डीम्ड–टू–बी यूनिवर्सिटी), आगरा–282005 के छात्र प्रतिनिधिमंडल ने 28 मार्च से 1 अप्रैल, 2024 तक पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, लुधियाना में आयोजित 37वें अंतर–विश्वविद्यालय राष्ट्रीय युवा महोत्सव में उल्लेखनीय सफलता प्राप्त की। ''हुनरः हार्वेस्टिंग नेशनल टैलेंट'' नामक इस प्रतिष्ठित कार्यक्रम में देश भर के विश्वविद्यालयों ने प्रतिभागिता की। डी.ई. आई. के छात्रों ने तीन प्रमुख कार्यक्रमों में अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया: वेस्टर्न ग्रुप सॉन्ग, ऑन–द–स्पॉट फोटोग्राफी और मेहंदी। वेस्टर्न ग्रुप सॉन्ग के प्रदर्शन ने आयोजकों से प्रशंसा अर्जित की, वहीं डी.ई.आई. प्रतिभागियों ने ऑन–द–स्पॉट फोटोग्राफी और मेहंदी दोनों प्रतियोगिताओं में दूसरा स्थान प्राप्त किया। कला संकाय के चित्रकला विभाग की छात्रा अस्तुति गोगिया ने ऑन–द–स्पॉट फोटोग्राफी में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया, और उसी विभाग की मुस्कान ने मेहंदी प्रतियोगिता में अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। उनकी उपलब्धियाँ विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण हैं क्योंकि उन्होंने देश भर के 117 विश्वविद्यालयों के प्रतिभागियों के साथ प्रतिस्पर्धा की। सफलता की यह यात्रा जनवरी 2024 में आयोजित क्षेत्रीय स्तर की प्रतियोगिताओं में डी.ई.आई. के छात्रों के उत्कृष्ट प्रदर्शन के साथ शुरू हुई। क्षेत्रीय स्तर पर उनकी जीत ने राष्ट्रीय युवा महोत्सव में उनका स्थान सुरक्षित कर दिया। राष्ट्रीय स्तर पर, उन्होंने प्रभावित करना जारी रखा,अंततः दो ट्रॉफी विजित कीं ।

दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट और वाटरलू विश्वविद्यालय ने शैक्षणिक और वैज्ञानिक सहयोग बढ़ाया

दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (डीम्ड–टू–बी यूनिवर्सिटी), दयालबाग़, आगरा–282005 और वाटरलू विश्वविद्यालय, कनाडा ने लगभग साठ वर्षों के संबंधों को नवीनीकृत और सुदृढ़ किया है, जिसे पहली बार जुलाई 2008 में एक सहयोगात्मक समझौते पर हस्ताक्षर करके औपचारिक रूप दिया गया था। विश्वविद्यालयों ने फरवरी–मार्च 2024 में चौथे कार्यकाल के लिए एक समझौता ज्ञापन (एम ओ यू) पर हस्ताक्षर किए हैं। डी.ई.आई. और वाटरलू के बीच एक औपचारिक समझौते पर पहली बार जुलाई 2008 में हस्ताक्षर किए गए थे और सहयोगी साझेदारी के परिणामस्वरूप कई संयुक्त शैक्षणिक और अनुसंधान गतिविधियाँ हुई हैं, जिनमें संयुक्त अनुसंधान, संकाय और छात्रों का आदान–प्रदान, सम्मेलनों, संगोष्ठियों का आयोजन और पारस्परिक लाभ और रुचि की अन्य समान गतिविधियाँ सम्मिलित हैं। निरंतर सहयोग के सार में:

क. डी.ई.आई. और वाटरलू मानते हैं की विश्वविद्यालय अन्य देशों में उच्च शिक्षा के संस्थानों के साथ सहयोग करके समृद्ध होते हैं।

ख. डी.ई.आई. और वाटरलू सहयोगात्मक अवसरों का पता लगाने के लिए संयुक्त इरादे को औपचारिक रूप से व्यक्त करना चाहते हैं।

ग. इस समझौता ज्ञापन ("एम.ओ.यू.") में, डी.ई.आई. और वाटरलू को व्यक्तिगत रूप से "संस्था" और सामूहिक रूप से "संस्थाएँ" के रूप में संदर्भित किया जा सकता है ।

ऑर्गेनाइज़ेशनल बिहेवियर एंड लाइफ स्किल पर शॉर्ट टर्म कैपेसिटी बिल्डिंग कार्यक्रम का आयोजन

भारतीय विश्वविद्यालय संघ–दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट–शैक्षणिक और प्रशासनिक विकास केंद्र (ए आई यू–डी.ई.आई.– ए ए डी सी) ने आई. सी. टी. सतत् शिक्षा केंद्र, दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (डीम्ड–टू–बी यूनिवर्सिटी), दयालबाग़, आगरा–282005 के सहयोग से 26 फरवरी, 2024 से 2 मार्च, 2024 तक *'Organizational Beahaviour and Life Skills leading to Better Worldliness'* पर एक अल्पकालिक क्षमता निर्माण कार्यक्रम आयोजित किया। इस प्रयास का मुख्य लक्ष्य सॉफ्ट स्किल्स या जीवन कौशल के बारे में जागरूकता और समझ विकसित करना था जो संगठनात्मक व्यवहार और इसकी आगामी सफलता की नींव हैं, जिससे बेहतर दुनियादारी की ओर अग्रसर होता है।

श्री अनूप श्रीवास्तव, उपाध्यक्ष, दयालबाग़ रा धा स्व आ मी सतसंग सभा और पूर्व अतिरिक्त महानिदेशक, (रेलवे सुरक्षा बल) उद्घाटन वक्ता थे। उन्होंने प्रतिभागियों को अपने लक्ष्यों में चयनात्मक होने और अम्ब्रा (सेंट्रल डार्क पार्ट ऑफ द शैडो) पर ध्यान केंद्रित करने के साथ–साथ पेनम्ब्रा (आउटर लैस डार्क पार्ट ऑफ द शैडो) के बारे में जागरूक होने की सलाह दी, जो एक उदाहरणात्मक सादृश्य है, ताकि निरंतर सुधार के साथ अपने लक्ष्यों तक पहुंच सकें, छोटे सुसंगत यथार्थवादी कदम उठा सकें और अप्रासंगिक विकर्षणों को रोक सकें। शिक्षा सलाहकार समिति के उपाध्यक्ष प्रो. वी.बी. गुप्ता (दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट के लिए एक प्रबुद्ध मंडल के रूप में कार्यरत एक गैर–सांविधिक निकाय) ने कई अभिनव सिफारिशों पर प्रकाश डाला, जो ACE (शिक्षा सलाहकार समिति, एक गैर–सांविधिक निकाय जो जो डी.ई.आई. के लिए एक प्रबुद्ध मंडल के रूप में कार्यरत है) द्वारा की गई थीं, जिन्हें प्रासंगिकता के साथ उत्कृष्टता के उच्चतम स्तर को प्राप्त करने के लिए संस्थान द्वारा लागू किया गया था। डी.ई.आई. के कार्यवाहक निदेशक प्रो. सी. पटवर्धन ने संघर्षों के प्रबंधन के महत्व और बेहतर विश्वव्यापीकरण, सभी संगठनों के अंतिम लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए एक संगठन में नेतृत्व की भूमिका पर प्रकाश डाला। विभिन्न स्थानों (उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, आंध्र प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, झारखंड और राजस्थान) से 33 प्रतिभागियों ने मिश्रित मोड में कार्यक्रम में भाग लिया। कार्यक्रम की समग्र पाठ्यक्रम सामग्री को दस मॉड्यूल के माध्यम से बारह प्रसिद्ध रिसोर्स परसन्स द्वारा वितरित किया गया था। सत्र अत्यधिक संवादात्मक और आकर्षक थे। श्रीमती पूनम प्रकाश, प्रभारी, आई सी टी सतत् शिक्षा केंद्र, डी.ई.आई और प्रो.ज्योति गोगिया, नोडल अधिकारी, ए.आई.यू. डी.ई.आई.–ए.ए.डी.सी कार्यक्रम के समग्र समन्वयक थे।

शोध प्रविधि पर शॉर्ट टर्म कैपेसिटी बिल्डिंग कार्यक्रम का आयोजन

भारतीय विश्वविद्यालय संघ–दयालबाग़ शैक्षणिक संस्थान–शैक्षणिक एवं प्रशासनिक विकास केंद्र (ए.आई.यू.–डी.ई.आई.–ए ए डी सी) ने वाणिज्य संकाय, डी.ई.आई. के अनुप्रयुक्त व्यवसाय अर्थशास्त्र विभाग के सहयोग से 11–16 मार्च, 2024 को शोध प्रविधि पर शॉर्ट टर्म कैपेसिटी बिल्डिंग कार्यक्रम आयोजित किया। कार्यक्रम का उद्देश्य नवोदित शोधकर्ताओं को उनके मूल शोध के संचालन के लिए तैयारी और प्रेरणा दोनों में सहायता करना था। वैज्ञानिक दृष्टिकोण के समावेश और शोध उपकरणों और तकनीकों की शुरूआत के माध्यम से, प्रतिभागियों को गहन जांच करने के लिए प्रशिक्षित किया गया। इसके अतिरिक्त, कार्यक्रम में कृत्रिम बुद्धिमत्ता के नैतिक उपयोग पर जोर दिया गया। सीखने को सुदृढ़ करने के लिए इंटरैक्टिव सत्र और व्यावहारिक अभ्यास का उपयोग किया गया। व्यापक पाठ्यक्रम सामग्री में आठ विषय विशेषज्ञों द्वारा तैयार किए गए बारह मॉड्यूल शामिल थे। विभिन्न स्थानों से कुल अड़तालीस प्रतिभागियों ने मिश्रित मोड में कार्यक्रम में भाग लिया। उद्घाटन समारोह के दौरान वाणिज्य संकाय के डीन और कार्यक्रम के संयोजक प्रो. वी. के. गंगल ने कार्यक्रम की थीम पेश की। शिक्षा के आधारभूत ढांचे विभाग के प्रोफेसर और डी.ई.आई. के शिक्षा संकाय के शोध समन्वयक प्रो. एन.पी.एस. चंदेल मुख्य अतिथि थे। उन्होंने मूल शोध के लिए शोध की आवश्यकता और महत्व तथा इसकी पर्याप्त कार्यप्रणाली पर प्रकाश डाला। अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़ के प्रबंधन विभाग के प्रोफेसर एम. नावेद खान मुख्य अतिथि थे। ए.आई.यू.– डी.ई.आई.–ए ए डी सी की नोडल अधिकारी प्रो. ज्योति गोगिया ने ए ए डी सी के उद्देश्य और इसके कार्यक्रमों के सफल क्रियान्वयन पर प्रकाश डाला। इस कार्यक्रम में विषय विशेषज्ञों के एक विद्वत् समूह ने भाग लिया, जिसमें अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के प्रबंधन विभाग के प्रोफेसर नावेद खान, दिल्ली विश्वविद्यालय के किरोड़ीमल कॉलेज के प्रोफेसर पुष्पेंद्र सूर्या, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी के अर्थशास्त्र विभाग की प्रोफेसर निधि शर्मा, गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर में यूनिवर्सिटी बिजनेस स्कूल की डॉ. रेखा हांडा, डी.ई.आई. के मनोविज्ञान विभाग की डॉ. प्रीत कुमारी, डी.ई.आई. के केंद्रीय पुस्तकालय के लाइब्रेरियन डॉ. मांगे राम, डी.ई.आई. के इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग विभाग के डॉ. वी प्रेम प्रकाश और डी.ई.आई. के अर्थशास्त्र विभाग की प्रोफेसर रूपाली सतसंगी शामिल थे।

संकाय समाचार

कला संकायः

संगीत विभाग ने 19 मार्च, 2024 को प्रसिद्ध तबला कलाकार पंडित हिंडोले मजूमदार द्वारा तबला वादन पर एक व्याख्यान–सह–प्रदर्शन का आयोजन किया।

शिक्षकोपलब्धि–

- डॉ. शिवेंद्र प्रताप त्रिपाठी, सहायक प्रोफेसर संगीत विभाग ने 18 फरवरी, 2024 को ताज महोत्सव में तबला एकल वादन किया

और 26 फरवरी, 2024 को अयोध्या में रामोत्सव के दौरान तबला वादन में भी भाग लिया।

- 28 और 29 मार्च, 2024 को डॉ. निशीथ गौड़, सहायक प्रोफेसर संस्कृत विभाग को अनुसंधान एवं भाषा विकास विभाग, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा द्वारा ''बहुभाषी वातावरण में मातृभाषा शिक्षण की चुनौतियाँ और संभावनाएँ'' विषय पर आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में विषय विशेषज्ञ के रूप में आमंत्रित किया गया। जिसमें उन्होंने ''भारतीय बहुभाषी वातावरण में भारतीय भाषाएँ और लिपि प्रणाली'' विषय पर अपना भाषण दिया।

शिक्षा संकाय :

तीन दिवसीय कार्यशाला–सह–हैकथॉन का आयोजन

स्कूल ऑफ एजुकेशन, डी.ई.आई. आगरा द्वारा 12 से 14 मार्च, 2024 तक तीन दिवसीय कार्यशाला–सह–हैकथॉन का आयोजन किया गया था। कार्यशाला का उद्देश्य छात्रों को आर्डूइनो किट की बुनियादी बातों के बारे में प्रशिक्षित करना था। कार्यशाला के विशेषज्ञ, डी.ई.आई. के विज्ञान संकाय के शिक्षक, श्री हार्दिक चड्ढा ने प्रतिभागियों को इलेक्ट्रॉनिक किट के उपयोग और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (ए आई) के एकीकरण के बारे में बताया। शिक्षा, इंजीनियरिंग और बी. वोक से प्रतिभागी। अनुशासन, शिक्षा के विभिन्न विषयों पर समूहों में विकसित परियोजनाएँ। उन्होंने शिक्षण–अधिगम स्थितियों को हल करने के लिए ए आई का प्रभावी अनुप्रयोग किया। प्रोफेसर नंदिता सतसंगी, डीन, शिक्षा संकाय अन्य संकाय सदस्यों के साथ, प्रोफेसर एन.पी.एस. चंदेल, प्रो. सविता श्रीवास्तव और प्रो. सोना आहूजा ने परियोजनाओं का मूल्यांकन किया। एस ओ ई की समन्वयक डॉ. सोना दीक्षित ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया। कार्यशाला के संयोजक डॉ. नेहा जैन और श्री हार्दिक चड्ढा थे। हैकथॉन प्रतियोगिता का संचालन श्रीमती मुग्धा शर्मा ने किया।

शिक्षा में प्रभावी संचार हेतु शास्त्रीय नृत्य पर कार्यशाला का आयोजन

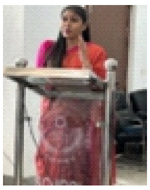

शिक्षा में प्रभावी संचार हेतु शास्त्रीय नृत्य पर कार्यशाला का आयोजन 8 अप्रैल, 2024 को पंडित मदन मोहन मालवीय नेशनल मिशन ऑन टीचर्स एंड टीचिंग (पी एम एम एम एन एम टी टी) के तहत स्कूल ऑफ एजुकेशन, फैकल्टी ऑफ एजुकेशन में एक दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। ''हार्मोनाइजिंग एक्सप्रेशनः शिक्षा में प्रभावी संचार के लिए शास्त्रीय नृत्य की नींव'' शीर्षक वाली कार्यशाला को सभी स्तरों पर शिक्षण विधियों को समृद्ध करने के लिए डिजाइन किया गया था। आगरा की प्रसिद्ध भरत नाट्यम नृत्यांगना आरती हरिप्रसाद ने वृन्दावन के ओडिसी नृत्य विशेषज्ञ श्री प्रताप बहेरा के साथ कार्यशाला का नेतृत्व किया। भाग लेने वाले शिक्षकों ने गैर–मौखिक संचार की अपनी समझ को समृद्ध किया। सेवा–पूर्व शिक्षकों ने नवीन रणनीतियों के साथ पाठ योजनाओं में नृत्य गतिविधियों को शामिल करना सीखा, जिससे बौद्धिक रूप से प्रेरक वातावरण तैयार हुआ। 164 पूर्व–सेवा शिक्षकों, शिक्षक प्रशिक्षुओं और शोधकर्त्ताओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। शिक्षा संकाय प्रमुख प्रोफेसर नंदिता सत्संगी ने मेहमानों का स्वागत किया, जबकि प्रोफेसर एन.पी.एस. चंदेल और प्रोफेसर सविता श्रीवास्तव ने उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता की। कार्यशाला का आयोजन डॉ. मनु शर्मा और स्कूल ऑफ एजुकेशन की समन्वयक डॉ. सोना दीक्षित द्वारा किया गया था।

विज्ञान संकाय :

शिक्षकोपलब्धिः

डी.ई.आई. के भौतिकी और कंप्यूटर विज्ञान विभाग के सहायक प्रोफेसर डॉ. जीशान सैफी ने 15–16 मार्च, 2024 के दौरान अलोसिल्जा नैनो–बायोसेंसर लैब, मिशिगन स्टेट यूनिवर्सिटी, यू.एस.ए. द्वारा आयोजित चौथे ग्लोबल एलायंस फॉर रैपिड डायग्नोस्टिक्स (गार्ड)–2024 फोरम में *''Decoding Counterfeit Pharmaceuticals: Scientifically Unmasking Deception''* विषय पर एक आमंत्रित वार्त्ता दी।

समाज विज्ञान संकाय :

दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन

सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम (एम एस एम ई) निर्माण और विकास में डिजिटलीकरण की भूमिका

प्रबंधन विभाग, सामाजिक विज्ञान संकाय, डी.ई.आई. ने भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद (आई सी एस एस आर), नई दिल्ली के सहयोग से सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम (एम एस एम ई) निर्माण और विकास में डिजिटलीकरण की भूमिका पर 12–13

अप्रैल, 2024 को दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया। कार्यशाला आई सी एस एस आर, नई दिल्ली द्वारा वित्त पोषित एक प्रमुख अनुसंधान परियोजना से शुरू हुई, जिसमें प्रबंधन विभाग से प्रोफेसर सुमिता श्रीवास्तव परियोजना निदेशक के रूप में और प्रबंधन विभाग से डॉ. जसप्रीत कौर सह–परियोजना निदेशक के रूप में कार्यरत थीं। कार्यशाला के दौरान, सात टीमों ने जूरी के सामने अपने विचार प्रस्तुत किए, जिसमें विभिन्न क्षेत्रों के पेशेवर शामिल थे, जिनमें श्री अचिंत्य शर्मा (सी ई ओ और संस्थापक, अमियाच टेक्नोलॉजी प्राइवेट लिमिटेड), श्री अंजुल दयाल (वी पी–एक्सेंचर सॉल्यूशंस), प्रोफेसर तूलिका सक्सेना शामिल थे। (प्रमुख और डीन, प्रबंधन संकाय, महात्मा ज्योतिबा फुले रोहिलखंड विश्वविद्यालय, बरेली), और डॉ. स्वतंत्र (एसोसिएट प्रोफेसर, आई आई एम–इंदौर)। निर्णायक मंडल ने सभी टीमों को उनकी प्रस्तुति के बाद फीडबैक दिया।

उद्घाटन सत्र में डी.ई.आई. के कार्यवाहक निदेशक प्रोफेसर सी पटवर्धन का स्वागत भाषण, डी.ई.आई. फिल्म की स्क्रीनिंग और डी.ई.आई. के प्रबंधन विभाग के प्रमुख प्रोफेसर संजीव स्वामी द्वारा कार्यशाला का परिचय दिया गया। डॉ. सुनील शुक्ला, महानिदेशक, भारतीय उद्यमिता विकास संस्थान, अहमदाबाद, गुजरात, मुख्य अतिथि थे, और प्रोफेसर फ्रांसिस्को लिनन, उद्यमिता के पूर्ण प्रोफेसर, सेविले विश्वविद्यालय, स्पेन, ने पूर्ण वक्ता के रूप में कार्य किया। पहले दिन का समापन डी.ई.आई. के छात्रों द्वारा प्रस्तुत सांस्कृतिक कार्यक्रम के साथ हुआ। दूसरे दिन, चार महिला उद्यमियों, डॉ. रितु भटनागर (सी ई ओ और सह–संस्थापक, पिक्सेल टूथ), सुश्री ऋचा बंसल (निदेशक और सह–संस्थापक, पिंक एंड पर्पल मार्केटिंग प्राइवेट लिमिटेड), डॉ. हिफाज अफाक (सी टी ओ और सह–संस्थापक, शूएगारो फैशन प्राइवेट लिमिटेड), और सुश्री संगति बंसल (संस्थापक, करीपट्टा कंपनी) ने अपने केस अध्ययन प्रस्तुत किए। इसके बाद डेटारेसोल्व प्राइवेट लिमिटेड के संस्थापक श्री ध्रुव खन्ना द्वारा एक संपूर्ण भाषण दिया गया। 'एम एस एम ई और डिजिटलीकरणः चुनौतियां और अवसर' विषय पर पैनल चर्चा में प्रोफेसर पुष्पेंद्र कुमार (दिल्ली विश्वविद्यालय), डॉ. रितु भटनागर (सह–संस्थापक, पिक्सेल टूथ), श्री सुभासिस मुखोपाध्याय (संस्थापक, ट्रेकल टेक), श्री अचिंत्य शर्मा (संस्थापक, अमियाच टेक्नोलॉजीज प्राइवेट लिमिटेड), श्री वैसाख टी.आर. (संस्थापक, प्रोफेज प्राइवेट लिमिटेड), श्री ध्रुव खन्ना (संस्थापक, डेटारेसोल्व प्राइवेट लिमिटेड), श्री वेद पाल धर (ब्रांड मालिक, माई काइंड ऑफ प्लेस (एम के ओ पी)), और डॉ. जसप्रीत कौर (सहायक प्रोफेसर), प्रबंधन विभाग, डी.ई.आई.) शामिल थे। पैनल चर्चा का संचालन कार्यशाला समन्वयक प्रोफेसर सुमिता श्रीवास्तव ने किया।

टेकवेंचर 2024 पुरस्कार समारोह के दौरान, डी.ई.आई. के रजिस्ट्रार प्रोफेसर आनंद मोहन ने विजेताओं को सम्मानित किया। इंजीनियरिंग संकाय के 'क्रिएटिव कैटलिस्ट' समूह, जिसमें दिव्यांश, हर्षित चौधरी और तनिष्का चौधरी शामिल थे, ने स्वर्ण पदक जीता। इंजीनियरिंग संकाय से गौरी शर्मा, दिव्या कुशवाह और नंदिनी कुशवाह के 'इको स्पंज स्क्वाड' ने रजत पदक हासिल किया। एक अन्य समूह, 'टेक बस्टर्स', जिसमें इंजीनियरिंग संकाय से राहुल जयसवाल, श्रुति गोयल और यश शाक्य शामिल थे, ने भी स्वर्ण पदक जीता। अंत में, सामाजिक विज्ञान संकाय (एकीकृत–एम बी ए) के सार्थक जैन, पूजा कौशिक, निकिता रावत और कनिष्का पाठक की 'कस्टम क्लोदिंग' शीर्षक वाली पोस्टर प्रस्तुति को कांस्य पदक मिला। कार्यक्रम का समापन संस्थान की प्रार्थना और राष्ट्रगान के साथ हुआ।

शिक्षकोपलब्धिः

प्रोफेसर सुमिता श्रीवास्तव और डॉ. जसप्रीत कौर को प्रबंधन संकाय, एम जे पी रोहिलखंड विश्वविद्यालय, बरेली में 8 से 10 अप्रैल, 2024 तक आयोजित की गई तीन दिवसीय प्रोफेसर एस.बी. सिंह मेमोरियल व्याख्यान श्रृंखला में रिसोर्स पर्सन के रूप में आमंत्रित किया गया था।। प्रोफेसर सुमिता श्रीवास्तव ने "Exploring the Aspiration- Reality Gap: Understanding Millennial Career Expectations and Experiences." शीर्षक से एक व्याख्यान दिया। डॉ. जसप्रीत कौर के वक्तव्य का शीर्षक था, 'Value-based Leadership at VUCA World'.

छात्र और शिक्षकोपलब्धियाँः

सुश्री पूजा केवलरमानी शोधार्थी, प्रबंधन विभाग, डी.ई.आई., ने शोध निर्देशिका डॉ. जसप्रीत कौर के साथ एवं डी.ई.आई. की प्रोफेसर सुमिता श्रीवास्तव और सेविले विश्वविद्यालय, स्पेन के प्रोफेसर फ्रांसिस्को लिनन के साथ भारत में: जेवियर स्कूल ऑफ मैनेजमेंट, एक्स एल आर आई, जमशेदपुर द्वारा 08 से 10 अप्रैल, 2024 तक 'Artificial Intelligence and Sustainability' विषय पर आयोजित डॉक्टोरल कोलोक्वियम–2024 में 'उद्यमिता' ट्रैक में एक व्यापक अध्ययन किया तथा 'AI Startup Dynamics in India: A Comprehensive Study' शीर्षक वाले सर्वश्रेष्ठ पेपर के लिए पुरस्कार प्राप्त किया।

खंड खः डी.ई.आई. ऑनलाइन और दूरस्थ शिक्षा

कोऑर्डिनेटर की डेस्क से

दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (डीम्ड–टू–बी यूनिवर्सिटी) ने 2 जून, 2004 को अपना दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम मिश्रित (blended) शिक्षा मोड (mode) में शुरू किया यानी पारंपरिक शिक्षा और ई–एजुकेशन के मिश्रण के रूप में। ई–एजुकेशन का अनुभव बहुत फायदेमंद साबित हुआ जब गर्मियों में भारत में कोविड–19 महामारी ने वर्ष 2020 में दस्तक दी और हम सुचारू रूप से ऑनलाइन शिक्षा परिवर्तन करने में सक्षम थे और बाद में जब हमने पांच यू जी सी–अधिकृत डिग्री–स्तरीय कार्यक्रमों में सत्र 2021–22 में ऑनलाइन मोड में स्विच ओवर करने का निर्णय लिया।

ई–सतसंग की शुरूआत से जो जबरदस्त लाभ हुआ है, उससे हम सभी परिचित हैं। लेकिन कुछ लोगों को शायद इस बात की जानकारी नहीं होगी जिसका आई सी टी सेंटर, स्वामी नगर, नई दिल्ली के डीन प्रो. गुरसरन की रिपोर्ट से पता चलता है जो उन्होनें मुझे भेजी और जिसे नीचे पुनः प्रस्तुत किया गया है:

ई–सतसंग का विकास 2 जून, 2004 को एम टी वी पुरम (तमिलनाडु) में दयालबाग़ शैक्षिक संस्थान के दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम के शुभारंभ में हुआ। उस कार्यक्रम में, एम टी वी पुरम और दयालबाग़ के बीच एक नया दोतरफा प्रसारण हुआ – वह स्थान जिसने कार्यक्रम को इंटरैक्टिव होने का दर्जा दिया। संस्थान की प्रार्थना दयालबाग़ से प्रस्तुत की गई और एम टी वी पुरम तक प्रसारित की गई; उद्घाटन भाषण और ग्रेशस हुज़ूर के पवित्र बचन को दयालबाग़ में प्रेषित किया गया; और अंत में, संस्थान गीत दयालबाग़ में गाया गया और एम टी वी पुरम में प्रसारित किया गया। मालिक की अपार कृपा से प्रक्षेपण सफल रहा। नियोजित प्रौद्योगिकियां सबसे अल्पविकसित थीं: ऑडियो सीधे मोबाइल फोन लाइन पर प्रसारित किया जाता था, और वीडियो छवियां (हर 3 सेकंड में एक) याहू सर्वर (एक तृतीय–पक्ष सर्वर) के माध्यम से प्रसारित की जाती थीं।

इस कार्यक्रम के समाप्त होने के तुरंत बाद, तमिल राधास्वामी सतसंग एसोसिएशन (एम टी वी पुरम में भी आयोजित) के पचास वर्षों के जश्न को चिह्नित करने के लिए एक दूसरे समारोह में, ग्रेशस हुज़ूर को यह टिप्पणी करते हुए प्रसन्नता हुई:

"आज सुबह हमने जो साहसिक नया प्रयोग देखा, वह वास्तव में टेली–एजुकेशन का अग्रदूत है और टेली–सतसंग या जैसा कि आप इसे ई–एजुकेशन और ई–सतसंग यानी इलेक्ट्रॉनिक शिक्षा और इलेक्ट्रॉनिक सतसंग कह सकते हैं। सुबह के समारोह के दौरान हमें दयालबाग़ में राधास्वामी सतसंग के गर्भगृह का पूरा दृश्य और परम गुरु हुज़ूर डा. एम.बी लाल साहब के साथ राधास्वामी सतसंग का सबसे पवित्र सिंहासन दिखाई दिया। आज सुबह यहां एकत्र हुए सभी सतसंगियों के लिए यह एक उत्साहजनक अनुभव था।"

इस प्रकार ''ई–सतसंग'' शब्द का जन्म हुआ। तब से, अपार कृपा के माध्यम से, दुनिया भर के सतसंगियों को सतसंग हॉल में सबसे दूर बैठकर पवित्र बचन सुनने व दर्शन करने का अवसर मिला है, जबकि ई–सतसंग टीमों को सेवा के लिए एक दुर्लभ और विशेष अवसर दिया गया है। ई–सतसंग का जन्म और प्रसार निस्संदेह सतसंग के इतिहास में एक महत्वपूर्ण मोड़ रहा है। किसी ने कल्पना नहीं की थी कि ई–सतसंग एम टी वी पुरम में एक छोटे से प्रयोग के साथ अपने जन्म से लेकर आज के 160–स्टेशन कैस्केड नेटवर्क तक इतनी लुभावनी गति से विकसित होगा...

2 जून, 2004 को ई–सतसंग के शुभारंभ के बाद 7 जून, 2004 को काकीनाडा में दूसरा प्रयोग किया गया। सतसंग एक बार फिर दयालबाग़ के साथ संवादात्मक था, काकीनाडा से सतसंग की कार्यवाही दयालबाग़ तक प्रसारित की गई, और दयालबाग़ से महिला पाठ काकीनाडा तक प्रसारित किया गया। कुछ दिनों बाद, 10 जून, 2005 को, राजाबारारी में एक शांत और पवित्र पहाड़ी की चोटी पर, जहां कभी हुज़ूर साहबजी महाराज बैठते थे, ग्रेशस हुज़ूर ने यह घोषणा करते हुए प्रसन्नता व्यक्त की कि अगला ई–सतसंग प्रसारण सीधे न्यूयॉर्क और लंदन तक जाएगा। यह एक जनादेश था, जिसने ई–सतसंग के विकास की शुरुआत की

भविष्यवाणी की थी।

हम इसे सौभाग्य मानते हैं कि ई–सतसंग के विकास में डी.ई.आई. के दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम की भूमिका थी। वर्तमान में, हमारे पृथ्वी ग्रह पर 484 ± 1 ई–सतसंग केंद्र स्थित हैं। हमें उम्मीद है कि आने वाले वर्षों में वे हमारे कार्यक्रमों की मेज़बानी करेंगे।

(प्रो. वी.बी. गुप्ता)

नोटः उपरोक्त रिपोर्ट का एक संपादित संस्करण सभा द्वारा वर्ष 2015 में प्रकाशित 'दयालबाग' गार्डन ऑफ द मर्सिफुल, 1915–2015 में प्रकाशित हुआ है।

शिक्षा 5.0 और इसका कार्यान्वयन

1. शिक्षा का विकास

निम्नलिखित योजनाबद्ध प्रतिनिधित्व (schematic representation) का उपयोग करके शिक्षा 1.0 से शिक्षा 5.0 के संदर्भ में हाल के प्रकाशन [1] में पिछले वर्षों में शिक्षा के विकास पर विचार किया गया है:

इस प्रकाशन में यह भी बताया गया है [1] कि शिक्षा 5.0 द्वारा शिक्षा 4.0 की निम्नलिखित कमियों को दूर करने का प्रयास किया गया है:

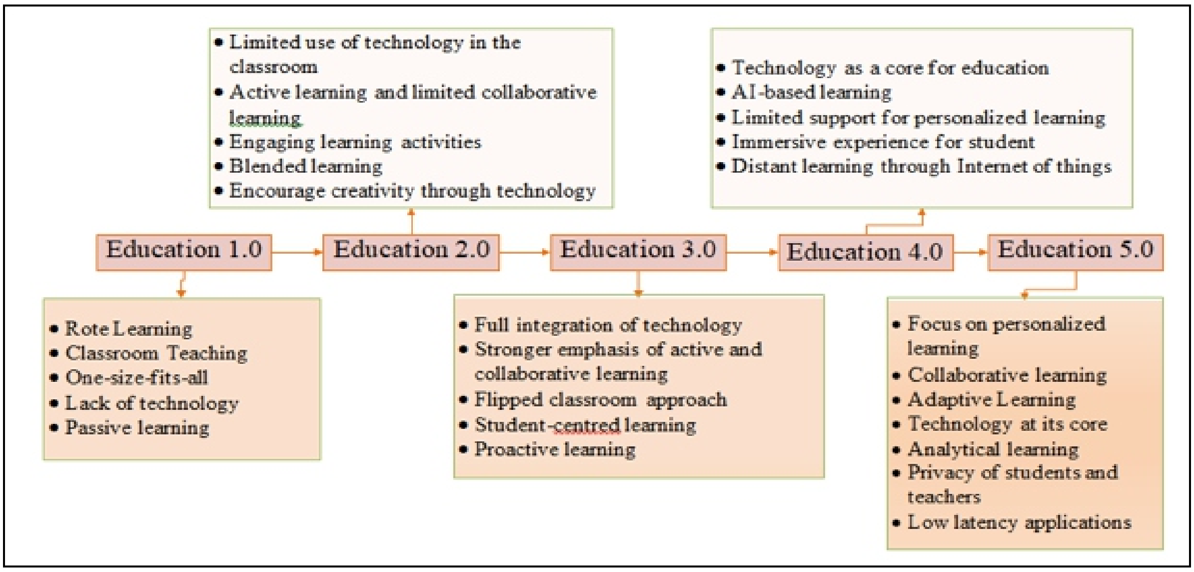

(i) पहुंच (Access) की कमी – शिक्षा 4.0 काफी हद तक प्रौद्योगिकी और इंटरनेट पर निर्भर करती है, जिससे वंचित छात्रों के लिए बाधाएं पैदा की जा सकती है।

(ii) मानव संपर्क जो सामाजिक और भावनात्मक कौशल विकसित करने के लिए आवश्यक है, प्रौद्योगिकी के उच्च उपयोग के कारण काफी कम हो गया है

(iii) प्रौद्योगिकी पर अत्यधिक निर्भरता एक ऐसी स्थिति पैदा करती है जब छात्र सीखने के लिए प्रौद्योगिकी पर इतने अधिक निर्भर हो जाते हैं कि उनमें स्वतंत्र रूप से सीखने के कौशल की कमी होने लगती है। शिक्षा 5.0 का लक्ष्य एक अधिक समावेशी और न्यायसंगत शिक्षा प्रणाली बनाकर इन कमियों को दूर करना है जो मानव संपर्क को बढ़ाने और स्वतंत्र शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए प्रौद्योगिकी का उपयोग करती है, उदाहरण के लिए, सीखने के लिए एक अंतःविषय दृष्टिकोण विकसित करने, अध्ययन के विभिन्न क्षेत्रों को एकीकृत करने और अधिक को बढ़ावा देने पर ध्यान केंद्रित करके छात्रों और शिक्षकों के बीच सहयोग उत्पन्न करना।

शिक्षा 5.0 का उद्देश्य व्यक्तिगत शिक्षा, सहयोग और कल्याण को बढ़ावा देना और महत्वपूर्ण सोच, रचनात्मकता और समस्या–समाधान जैसे 21वीं सदी के कौशल विकसित करना है।

2. शिक्षा 5.0 का कार्यान्वयन

विकसित और विकासशील देशों में शिक्षा 5.0 के कार्यान्वयन से संबंधित एक और दिलचस्प प्रकाशन [2] उपयोगी

जानकारी देता है।

सऊदी अरब और मलेशिया, जहां शिक्षा 5.0 सफलतापूर्वक लागू की जा रही है को विकसित (developed) देशों के रूप में चुना गया जबकि जिम्बाब्वे और श्रीलंका को विकासशील (develping) देशों के रूप में चुना गया।

विकसित देशों ने शिक्षा, उद्योग और व्यापार मंत्रालय में उच्चतम स्तर पर नियम और कानून स्थापित किए हैं। किसी भी स्तर पर प्रमुख बाधाओं की पहचान करने और शिक्षा क्षेत्र में स्थायी और विश्वसनीय प्रगति के लिए अंतर को पाटने पर ध्यान केंद्रित किया गया है। विकासशील देशों को साक्ष्य–आधारित अध्ययन परिणामों के आधार पर विभिन्न नए विचारों को प्रस्तावित करने के लिए सभी स्तरों पर वर्तमान स्थिति का निरीक्षण और आकलन करने के लिए और अधिक वैज्ञानिक अनुसंधान करने की आवश्यकता है।

अध्ययन के नतीजों से पता चला कि समग्र शिक्षा प्रक्रिया के पुनर्गठन के लिए शिक्षा के माहौल को और अधिक व्यवस्थित बनाने के लिए नियम और कानून बनाने की जरूरत है। विकासशील देशों में इसकी विशेष आवश्यकता है।

विकसित देश बाजार की जरूरतों और मांगों को पूरा करने के लिए उच्च शिक्षा क्षेत्र के विकास के लिए पर्याप्त वित्तीय संसाधन उपलब्ध करा रहे हैं क्योंकि उनका मानना है कि यह आर्थिक और औद्योगिक विकास के मामले में देश की भविष्य की संभावनाओं की रीढ़ है। दूसरी ओर, विकासशील देशों द्वारा शिक्षा में किया गया निवेश काफी कम है।

सन्दर्भः

[1] https://arxiv.org/pdf/2307.15846

[2] https://www.scirp.org/pdf/ce_2023051915532321.pdf

सूचना केंद्रों से समाचार

गादीरास (सुकमा) में मनाई गई होली

श्री गुफरान अहमद, सहायक कमांडेंट, केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल, गादीरास ने 25 मार्च, 2024 को 188 बटालियन, सी आर पी एफ कैंप में होली के अवसर पर डी.ई.आई. केंद्र, गादीरास (सुकमा) के छात्रों और कर्मचारियों को आमंत्रित किया। भजन और एक संक्षिप्त सांस्कृतिक कार्यक्रम और गुलाल के पारंपरिक अनुप्रयोग के बाद, सभी को प्रसाद वितरित किया गया।

रूड़की सेंटर में 'विश्व स्वास्थ्य दिवस' मनाया गया

डी.ई.आई.–रुड़की सेंटर में 7वां 'विश्व स्वास्थ्य दिवस' अप्रैल 2024, स्वास्थ्य और कल्याणप्रद जिन्दगी के महत्व पर जोर देने के लिए मनाया गया। इस महत्वपूर्ण दिन को चिह्नित करने के लिए और 'स्वास्थ्य' संगम सत्र के एक भाग के रूप में ''तैयार रहें: गंभीर परिस्थितियों के लिए प्राथमिक चिकित्सा रणनीतियाँ'' विषय पर एक ज्ञानवर्द्धक ऑनलाइन वार्ता कोरिन रोमन, आर एन, एम एस एन, रीड हेल्थ में प्रैक्टिस मैनेजर हॉस्पिटल, यू.एस.ए. द्वारा आयोजित की गयी। सुश्री कोरिन रोमन अमेरिकी स्वास्थ्य सेंटरों में दस वर्षों से अधिक अनुभव रखने वाली एक चिकित्सक हैं। उन्होंने अमूल्य अंतर्दृष्टि और प्राथमिक चिकित्सा में गंभीर स्थितियाँ, दर्शकों को आवश्यक ज्ञान से लैस करना आपात्कालीन स्थिति में प्रभावी ढंग से प्रतिक्रिया करने के लिए रणनीतियां साझा की। उनकी विशेषज्ञता और समर्पण ने स्वास्थ्य और सुरक्षा को बढ़ावा देने के लिए वास्तव में सभी को प्रेरित किया।

कार्यक्रम में संकाय सदस्यों, विद्यार्थियों एवं अतिथियों की सक्रिय भागीदारी रही। सुश्री कोरिन की प्रस्तुति के बाद, एक व्यावहारिक प्रश्न–उत्तर सत्र आयोजित किया गया, जिसमें संवाद को बढ़ावा दिया गया और महत्वपूर्ण स्वास्थ्य–संबंधित विषयों की समझ को गहरा किया गया। टॉक के बाद, छात्र प्लेसमेंट से संबंधित चुनौतियों और अवसरों पर चर्चा करने के लिए माता–पिता–शिक्षक बैठक बुलाई गई।

खंड ग: डी.ई.आई. के भूतपूर्व छात्र (AA DEIs & AAFDEI)

संपादक की डेस्क से

इस अंक के लेख हमारे ग्रह के सबसे शानदार जीवों में से एक – हाथियों – को श्रद्धांजलि हैं। सहानुभूतिपूर्ण, संवेदनशील और बेहद बुद्धिमान, उनकी अनुपस्थिति न केवल मनुष्यों के लिए बल्कि उन पर निर्भर पूरे पारिस्थितिकी तंत्र के लिए विनाशकारी होगी। आज पर्यावरणीय क्षरण, आवास हानि और अवैध शिकार के कारण खतरे में पड़े एशियाई हाथी को IUCN (इंटरनेशनल यूनियन फॉर कंजर्वेशन ऑफ नेचर) रेड लिस्ट में लुप्तप्राय के रूप में सूचीबद्ध किया गया है। एलिफेंट व्हिस्परर्स, जिसने सर्वश्रेष्ठ वृत्तचित्र लघु फिल्म के लिए 2022 अकादमी पुरस्कार जीता, हाथियों और उनकी देखभाल करने वालों के बीच घनिष्ठ संबंध का एक शक्तिशाली चित्रण है। यह फिल्म उन लोगों के सामने आने वाली चुनौतियों पर प्रकाश डालती है जो हाथी संरक्षण की दिशा में काम करते हैं और हाथी के अनाथ या घायल जीवों की देखभाल के लिए गहरे प्यार और प्रतिबद्धता के साथ काम करते हैं।

दयालबाग़ गौशाला में बढ़ते झुंडों में हाथियों के शामिल होने की संभावना आशा और खुशी लाती है, क्योंकि सभी प्राणियों को अभी भी वक्तध्वर्तमान संत सतगुरु, भगवान की सतर्क और हमेशा दयालु दृष्टि के तहत शाश्वत आनंद तक पहुंचने का सौभाग्य मिल सकता है। जो समस्त सृष्टि का और सदैव आनंद का अखंड स्रोत है।

हम अपने पाठकों से सुनने के लिए उत्सुक हैं। कृपया अपनी टिप्पणियाँ और योगदान aadeisnewsletter@gmail.com पर साझा करें ।

सूंड की कहानी, समय की ज़ुबानी

प्रणय भटनागर

M. Sc. (Zoology) *(बैच 2022)*; B. Sc. (Zoology) *(बैच 2020), डी.ई.आई.;*

वर्तमान में, प्रोजेक्ट एसोसिएट, रेंज-वाइड रिवर डॉल्फिन एस्टीमेशन प्रोजेक्ट, भारतीय वन्यजीव संस्थान, देहरादून

कोई भी भगवान की सबसे भव्य, सुंदर और बुद्धिमान रचनाओं में से एक को देखता है और आश्चर्य से पूछे बिना नहीं रह पाता – वे कहाँ से आए? लाखों वर्षों के इतिहास के साथ, हाथियों ने अपनी विकासवादी यात्रा 60 मिलियन वर्ष पहले मोएरीथेरियम नामक छोटे, कुत्ते के आकार के पूर्वजों के साथ शुरू की थी। समय के साथ, उन्होंने अपनी प्रतिष्ठित लंबी सूंड विकसित की –

जो जीवित रहने के लिए महत्वपूर्ण एक बहुमुखी उपकरण है। लगभग 25 मिलियन वर्ष पहले, ये पूर्वज मास्टोडॉन और मैमथ जैसी प्रजातियों में विभक्त हो गए, जिससे अंततः 5 से 10 मिलियन वर्ष पहले आज के अफ्रीकी और एशियाई हाथी उभरे।

हाथियों को 'पारिस्थितिकी तंत्र के इंजीनियर' के रूप में अच्छी तरह से सुरक्षित किया जा सकता है। पृथ्वी पर सबसे बड़े भूमि जानवर के रूप में, वे अपने निवास स्थान को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उनकी उपस्थिति पारिस्थितिकी तंत्र के माध्यम से गूंजती है, एक नाजुक संतुलन बनाती है जो पौधों और जानवरों के जीवन की विविध श्रृंखला का समर्थन करती है। ये सौम्य दिग्गज पारिस्थितिक तंत्र इंजीनियरों के रूप में कार्य करते हैं, पेड़ों को उखाड़कर, "हाथी लॉन" बनाकर और सूखे के समय में पानी का एक महत्वपूर्ण स्रोत बनने वाले जलकुंड खोदकर अपने आवासों को बदलते हैं। हाथी का गोबर, पोषक तत्वों का एक समृद्ध स्रोत है, पौधों के विकास को बढ़ावा देता है और कीड़ों और सूक्ष्म जीवों के एक संपन्न समुदाय का समर्थन करता है। बीज फैलाने वाले के रूप में उनकी भूमिका जंगलों को पुनर्जीवित करने और पौधों की विविधता को बनाए रखने में मदद करती है। हाथियों के बिना, पारिस्थितिकी तंत्र अत्यधिक विकसित हो सकता है, जिससे जैव विविधता और अन्य जानवरों के लिए खाद्य स्रोतों का नुकसान हो सकता है।

समस्त संसार में हाथियों की केवल तीन प्रजातियाँ पाई जाती हैं! दुनिया में हाथियों की तीन मान्यता प्राप्त प्रजातियाँ हैं, जिनमें से प्रत्येक की अलग–अलग विशेषताएँ और निवास स्थान हैं। प्रथम अफ्रीकी बुश हाथी (लोक्सोडोंटा अफ्रीकाना) पृथ्वी पर सबसे बड़ा जमीनी जानवर है, जो अपने बड़े आकार, लंबे दाँत और विशिष्ट आकार के कानों के साथ उप–सहारा अफरीका का मूल निवासी है। द्वितीय अफ्रीकी वन हाथी (लोक्सोडोंटा साइक्लोटिस) छोटा होता है और मध्य और पश्चिमी अफ्रीका के घने वर्षावनों में पाया जाता है, जिसके सीधे दाँत और छोटे कान उनके निवास स्थान के अनुकूल होते हैं। तथा एशियाई हाथी (एलिफस मैक्सिमस) अपने अफ्रीकी समकक्षों की तुलना में छोटा है, जो पूरे एशिया में विशिष्ट जुड़वां–गुंबददार सिर और उनकी सूंड के अंत में एक उंगली जैसे प्रक्षेपण के साथ पाया जाता है।

भारत किस प्रजाति का घर है? एशियाई हाथियों की चार मान्यता प्राप्त उप–प्रजातियाँ हैं, जिनमें से प्रत्येक की अलग–अलग विशेषताएँ और निवास स्थान हैं। भारतीय हाथी (एलिफस मैक्सिमस इंडिकस) भारतीय उपमहाद्वीप में व्यापक रूप से पाया जाता है, जो अपने अपेक्षाकृत छोटे आकार और बड़े कानों के लिए जाना जाता है। श्रीलंकाई हाथी (एलिफस मैक्सिमस मैक्सिमस) छोटा तथा श्रीलंका के लिए विशिष्ट है। सुमात्रा हाथी (एलिफस मैक्सिमस सुमैट्रानस) सबसे छोटी उप–प्रजातियों में से एक है, जो सुमात्रा के घने जंगलों में पाया जाता है और बोर्नियो पिग्मी हाथी (एलिफस मैक्सिमस बोर्नेसिस) बोर्नियो के जंगलों के लिए अनुकूलित है।

हाथी परिवार कैसे काम करते हैं? हाथी, जो अपनी जटिल सामाजिक संरचनाओं के लिए जाने जाते हैं, एक कुलमाता के नेतृत्व में घनिष्ठ पारिवारिक इकाइयाँ बनाते हैं। ये बुद्धिमान नेता अपनी संतानों का मार्गदर्शन करते हैं, जबकि झुंड मजबूत बंधन साझा करते हैं। युवा हाथी महिलाएं महत्वपूर्ण देखभाल व कौशल सीखती हैं, मां के रूप में अपनी भावी भूमिकाओं के लिए तैयारी करती हैं। नर हाथी, अधिक एकान्त जीवन जीते हुए, संभोग के मौसम के दौरान मादा झुंड में शामिल हो सकते हैं और इस दौरान मादा के साथ संबंध बना सकते हैं। (स्वरों और इशारों के माध्यम से वे अपनी सहानुभूति और सहयोग को दर्शाते हैं)। खतरे के समय, वे एकजुट होकर सुरक्षा घेरा बनाते हैं।

एशियाई हाथी को अंतर्राष्ट्रीय प्रकृति संरक्षण संघ (आई यू सी एन) की लाल सूची में लुप्तप्राय प्रजाति के रूप में वर्गीकृत किया गया है। भारत एशिया में जंगली एशियाई हाथियों की सबसे बड़ी आबादी का घर है, यद्यपि कृषि व विकास हेतु, तेजी से वनों की कटाई के कारण उनके निवास स्थान को नुकसान और विखंडन जैसे खतरों का सामना करना पड़ता है। मानव–हाथी संघर्ष (एच ई सी) एक गंभीर चुनौती है, जिससे फसल नष्ट हो जाती है, संपत्ति को नुकसान होता है और दोनों पक्षों की जान चली जाती है। अवैध शिकार, हालांकि उतना व्यापक नहीं है, हाथी दांत की मांग के कारण हाथियों के लिए खतरा बना हुआ है। भारत ने विभिन्न संरक्षण पहलों को लागू किया है, जिसमें नीलगिरि बायोस्फीयर रिजर्व और काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान जैसे संरक्षित क्षेत्र और एच ई सी को कम करने के उपाय जैसे हाथी–रोधी खाइयां और वन्यजीव गलियारे शामिल हैं। तथा समुदाय–आधारित संरक्षण परियोजनाएं भी चल रही हैं, जो स्थानीय समुदायों को शामिल कर रही हैं और वैकल्पिक आजीविका प्रदान कर रही हैं। हाथियों और मनुष्यों के बीच का स्थायी बंधन, जो मंदिर के हाथियों जैसी सांस्कृतिक प्रथाओं में देखा जाता है, इन शानदार प्राणियों और उनके आवासों की रक्षा करने की आवश्यकता को रेखांकित करता है। ऐसे भविष्य को सुरक्षित करने के लिए सरकार, संरक्षण समूहों, समुदायों और नागरिकों के बीच सहयोग आवश्यक है, जहां हाथी भारत के जंगलों में पनपते रहें और आने वाली पीढ़ियों के लिए जंगली भावना का प्रतीक बनें।

हाथी फुसफुसाते हुए, 2022 अकादमी विजेता वृत्तचित्र की समीक्षा

गुरप्यारी भटनागर

पी एच डी, अंग्रेजी साहित्यय एम ए अंग्रेजी (बैच 1996–1998), डी.ई.आई.

वर्तमान में, एसोसिएट प्रोफेसर, अंग्रेजी साहित्य, शारदा विश्वविद्यालय और फैसिलिटेटर, नोएडा डी.ई.आई. सूचना केंद्र

तमिलनाडु के मुदुमलाई टाइगर रिजर्व के केंद्र में स्थापित, एलिफेंट व्हिस्परर्स 40 मिनट की एक डॉक्यूमेंट्री है, जो एक समर्पित स्वदेशी जोड़े, बोम्मन और बेली और एक अनाथ हाथी, रघु के बीच एक शुद्ध और मार्मिक बंधन का वर्णन करती है। बोम्मन एक महावत है जो हाथियों को संभालने वालों की एक लंबी कतार से आता है, और उसे हाथियों के परित्यक्त बच्चों को उनके झुंड के साथ फिर से मिलाने में अपने पिता की विशेषज्ञता भेंट के स्वरूप मिली है। रघु को अपनाने का दंपति का निर्णय एक जरूरतमंद जानवर के पोषण और सुरक्षा के लिए एक गहरी प्रतिबद्धता है। अपने निस्वार्थ समर्पण और अटूट देखभाल के माध्यम से, वे प्यार और अपनेपन का अभयारण्य बनाते हैं।

डॉक्यूमेंट्री भावनात्मक क्षणों के धागों से बुनी गई एक टेपेस्ट्री है, जो पाठकों के दिलों को खुशी, उदासी और करुणा के गहरे मिश्रण से उद्वेलित करती है। रघु के चोट से उबरने और उसकी देखभाल करने वालों की निगरानी में उसके अच्छे स्वास्थ्य में लौटने के दृश्य बहुत हृदयस्पर्शी हैं। वे दृश्य भी उतने ही मार्मिक हैं जहां रघु बोम्मन के प्रति अपने प्यार का इजहार करता है, जबकि वह उसे नहलाता है, और देखभाल से खाना खिलाता है। रघु जल्द ही एक और हाथी के बच्चे, अम्मू से जुड़ जाता है, यह भी अनाथ है। रघु अम्मू के बड़े भाई की भूमिका निभाता प्रतीत होता है, जो एक चंचल ऊर्जा और अपने आस–पास की दुनिया के बारे में जिज्ञासा रखता है। दर्शक दो हाथियों के बीच एक गहरे बंधन को विकसित होते हुए देखते हैं, जो बोम्मन और बेली के जीवन में नया उद्देश्य, खुशी और पूर्णता लाता है। डॉक्यूमेंट्री का अंत वन विभाग द्वारा रघु को एक नए देखभालकर्ता को सौंपने के लिए घनिष्ठ परिवार से दूर ले जाने के साथ होता है। जैसे ही रघु को ले जाया जाता है, बोम्मन और बेली का दिल टूट जाता है। कैमरे द्वारा कैद किए गए एक कोमल दृश्य में, अम्मू अपनी सूंड के कोमल स्पर्श से बेली के गालों पर छलक आए आंसुओं को पोंछ देती है। डॉक्यूमेंट्री ऐसे मार्मिक प्रसंगों से परिपूर्ण है, जहां प्रत्येक दृश्य भावनाओं के नाजुक संतुलन के साथ सामने आता है।

अतिक्रमणकारी विकास और पर्यावरणीय गिरावट की पृष्ठभूमि के खिलाफ, यह फिल्म प्राकृतिक दुनिया के साथ सामंजस्यपूर्ण रूप से सह–अस्तित्व और इसके सबसे कमजोर निवासियों की रक्षा करने की तत्काल आवश्यकता की मार्मिक याद दिलाती है। लुभावनी सिनेमैटोग्राफी के साथ, फिल्म दर्शकों को इस असाधारण कहानी के जादू का प्रत्यक्ष अनुभव करने के लिए आमंत्रित करती है। अंततः, फिल्म एक गहरा प्रभाव छोड़ती है, दर्शकों को प्राकृतिक दुनिया के साथ अपने संबंधों का पुनर्मूल्यांकन करने और करुणा और हृदय स्वरूप संबंध बनाने की परिवर्तनकारी शक्ति अपनाने के लिए प्रेरित करती है।

गुनीत मोंगा द्वारा निर्मित और कार्तिकी गोंसाल्वेस द्वारा निर्देशित, डॉक्यूमेंट्री ने 95वें अकादमी पुरस्कारों में लघु विषय श्रेणी में सर्वश्रेष्ठ डॉक्यूमेंट्री जीतने वाली पहली भारतीय फिल्म के रूप में इतिहास रचा। ऑस्कर में इसकी जीत भारतीय सिनेमा के लिए गर्व का क्षण है और देश के फिल्म उद्योग की समृद्ध विविधता और रचनात्मकता का प्रमाण है।

दिव्य आह्वान

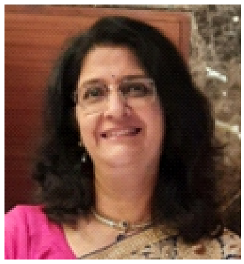

प्रिया सिंह

बैच: एम बी एम (1993), धर्मशास्त्र में स्नातकोत्तर डिप्लोमा (2012), डी.ई.आई.; वर्तमान में, केंद्र प्रभारी, डी.ई.आई. चेन्नई सूचना केंद्र

हम आसपास के सबसे बड़े भूमि जानवर हैं, प्राचीन काल से, प्रकृति के साथ रहते हैं, जंगलों में, खुली हवा में, अपनी जनजाति के बीच, सद्भाव, प्रेम और देखभाल में रहते हैं।

मनुष्य के लालच ने हमें और हमारे प्राकृतिक आवास से दूर धकेल दिया
चिड़ियाघरों, सर्कसों, मंदिरों में हमारा जीवन शुरू हुआ। जीवन तब और अधिक चुनौतीपूर्ण और कठिन हो गया, जब मनुष्य ने व्यापार और मनोरंजन के लिए हमारा शिकार किया गये। पकड़ा गया, वश में किया गया और पिंजरे में बंद किया गया, हमारा अस्तित्व अब इस स्तर पर पहुंच गया है। कि हम शांतिपूर्ण, प्रेमपूर्ण, लचीले जानवर हैं, प्रकृति की ओर वापस जाने की लालसा रखते हैं...अभी तक।

हमारे दुख, दुःख, हम समाप्त करना चाहते हैं, हम सर्वशक्तिमान अर्थात ईश्वर को हार्दिक प्रार्थनाएँ भेजते हैं, हे भगवान, हमें मोहलत और राहत दें, माँ प्रकृति की ओर वापस जाने में मदद करें, प्राकृतिक आवास हमारे लिए बहुत प्रिय है, खुले में रहना, बिना किसी डर के!
हमारी प्रार्थनाएँ आखरिकार परमपिता तक पहुँच गईं,

जो 'द गार्डन ऑफ द मर्सीफुल' में रहता है,
जहाँ मनुष्य, जानवर एक साथ सद्भाव से रहते हैं,
जो दयालबाग़ की भूमि है। अत्यधिक सुंदर व प्रसंन्ता से भरी हुई।

जहाँ सभी स्तनधारियों के लिए एक अभयारण्य और दिव्य आश्रय
यहाँ मनुष्य, गाय, भैंस, बकरी, ऊँट आदि रहते हैं,

हमें भी वरदान मिला है,
परमपिता ने हमें शीघ्र ही उनके साथ जुड़ने का आदेश दिया है।

दूर–दूर तक हमारी तलाश जारी है,
दिव्य गुरु हमारा चरवाहा और मार्गदर्शक है,
हमें पवित्र भूमि पर लाने के लिए,
जहां हम खड़े होंगे, ऊंचे और भव्य।
परमपिता, हम आपके बहुत आभारी हैं,

पूर्व छात्रों की बाइट्स....

"दयालबाग में शिक्षा का सबसे बड़ा लाभ है..."

डी.ई.आई. के इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग कार्यक्रम के स्नातक के रूप में, संस्थान में मैनें अपने समय में न केवल तकनीकी ज्ञान प्रदान किया बल्कि महत्वपूर्ण उद्यमशील गुणों को भी विकसित किया। डी.ई.आई. के समग्र शिक्षा दृष्टिकोण, आधुनिक शिक्षाविदों को नैतिकता के साथ एकीकृत करने ने मेरी मानसिकता को आकार दिया। विविध पाठ्यक्रम और सहायक परामर्श के माध्यम से, मैंने लचीलापन, जोखिम लेने की क्षमता, अनुकूलनशीलता और नवीन सोच विकसित की। अंत:विषय शिक्षा और सामुदायिक सेवा पर डीईआई के जोर ने मेरे नेतृत्व कौशल को बढ़ावा दिया, जो पहली पीढ़ी के उद्यमी के लिए आवश्यक है। अर्थात एक पंक्ति में, डी.ई.आई. ने मुझे नए उद्यम शुरू करने के लिए आवश्यक गुणों को विकसित करने के लिए एक मजबूत आधार प्रदान किया, जिसने मुझे अत्यधिक चुनौतीपूर्ण व्यावसायिक माहौल में आत्मविश्वास से अवसरों का पीछा करने में सक्षम बनाया।

–समीर मल्होत्रा, बी टेक, इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग (बैच 1989–1993); वर्तमान में निदेशक, स्प्रिंगफील पॉलीयूरेथेन फोम प्राइवेट लिमिटेड; निदेशक, स्प्रिंगफील विंड एनर्जी प्रा. लिमिटेड और विभिन्न स्टार्ट–अप के लिए मेंटर।

प्रकाशन समितियाँ / सम्पादकीय बोर्ड

डी.ई.आई.

संरक्षक

प्रो. सी. पटवर्धन

मुख्य संपादक

प्रो. जे.के. वर्मा

संपादक

डॉ. सोना दीक्षित

डॉ. सोनल सिंह

डॉ. अक्षय कुमार सत्संगी

डॉ. बानी दयाल धीर

सदस्य

डॉ. चारु स्वामी

डॉ. नेहा जैन

डॉ. सौम्या सिन्हा

श्री आर.आर. सिंह

प्रो. प्रवीण सक्सेना

प्रो. वी. स्वामी दास

डॉ. रोहित राजवंशी

डॉ. भावना जौहरी

सलाहकार

प्रो. एस.के. चौहान

अनुवादक

डॉ. नमस्या

डॉ. निशीथ गौड़

डी.ई.आई.–ओ.डी.ई.
(डी.ई.आई. ऑनलाइन और दूरस्थ शिक्षा)

संरक्षक

प्रो. सी. पटवर्धन

प्रो. वी.बी. गुप्ता

संपादकीय सलाहकार

प्रो. एस.के. चौहान

प्रो. जे.के. वर्मा

संपादकीय मंडल

डॉ. सोनल सिंह

डॉ. मीना पायदा

डॉ. लॉलीन मल्होत्रा,

डॉ. बानी दयाल धीर

श्री राकेश मेहता

अनुवादक

डॉ. स्वामी प्यारी कौड़ा

डी.ई.आई. Alumni
(AADEIs & AAFDEI)

संपादक

प्रो. गुर प्यारी जंडियाल

संपादकीय समिति

डॉ. सरन कुमार सतसंगी,

प्रो. साहब दास

डॉ.बानी दयाल धीर

श्रीमती शिफाली सत्संगी

श्रीमती अरुणा शर्मा

डॉ.स्वामी प्यारी कौड़ा

डॉ. गुरप्यारी भटनागर

डॉ. वसंत वुप्पुलुरी

अनुवादक

डॉ. स्वामी प्यारी कौड़ा

डॉ. नमस्या

प्रशासनिक कार्यालय:
पहली मंजिल, 63,
नेहरू नगर,
आगरा –282002

पंजीकृत कार्यालय:
108, साउथ एक्स प्लाजा –1,
साउथ एक्सटेंशन पार्क II,
नई दिल्ली–110049

चित्रण, मुद्रण एवं ई–प्रकाशनः दयालबाग़ प्रेस